L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU.
Assistant professor.
Guest Teacher.
N.S.J. college RAJNAGAR.
MADHUBANI (BIHAR)
pramod kumar shg 2018 @ gmail.com.

B.A PART- I
PAPER - III
PSYCHOLOGY (HONOURS)
TOPIC - The socio-psycho-logical factors in population growth.

Q. जनसंख्या के मनोसामाजिक कारकों का वर्णन।

भारत वर्ष में जनसंख्या विस्फोट से जनसंख्या में बहुत तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। जिसके अनेक कारण हैं। इन कारणों में आर्थिक व सामाजिक कारणों का तो भूमिका है ही साथ-साथ मनोवैज्ञानिक कारणों का है। जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि हो रही है। जनसंख्या वृद्धि के कुछ सामाजिक-मनोवैज्ञानिक कारण निम्न प्रकार से हैं—

(1) विवाह की आयु :- विवाह एवं अध्ययन से देखा गया है कि सन्तान उत्पत्ति का दर सर्वाधिक 25 वर्ष से 29 वर्ष की आयु में होती है। इसका मुख्य कारण है कि विवाह की आयु न्यूनतम स्तर विस्तार में पाया जाता है। हैदर (1983) ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि 25 वर्ष या उससे कम आयु की महिलाओं के सर्वाधिक अधिक बच्चे उत्पन्न होते हैं, जबकि 45 वर्ष की आयु तक की महिलाओं में अपेक्षाकृत कम बच्चे उत्पन्न होते हैं। अतः कहा जा सकता है कि विवाह के होने के कुछ वर्षों तक बच्चों के उत्पन्न होने की सम्भावना सर्वाधिक होती है। जबकि अधिक आयु पर बच्चों के उत्पन्न होने की औसत घट जाती है।

Scanned with CamScanner

॥

(ii) ਜਨਸੰਖਿਆ ਔਰ ਸ਼ਿਕਸ਼ਾ :- ਜਨਸੰਖਿਆ ਵ੍ਰਿਧਿ ਕਾ ਸ਼ਿਕਸ਼ਾ ਸੇ ਸੀਧਾ ਸੰਬੰਧ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਸ਼ਿਕਸ਼ਿਤ ਲੋਗੋਂ ਮੇਂ ਅਸ਼ਿਕਸ਼ਿਤ ਲੋਗੋਂ ਕੀ ਅਪੇਕਸ਼ਾ ਬੱਚੇ ਕਮ ਉਤਪੰਨ ਹੋਤੇ ਹੈਂ। ਔਰ ਅਧਿਐਨੋਂ ਮੇਂ ਯਹ ਭੀ ਦੇਖਾ ਗਯਾ ਹੈ ਕਿ ਅਸ਼ਿਕਸ਼ਿਤ ਲੋਗੋਂ ਕੀ ਅਪੇਕਸ਼ਾ ਸ਼ਿਕਸ਼ਿਤ ਲੋਗੋਂ ਮੇਂ ਪਰਿਵਾਰ ਨਿਯੋਜਨ ਕੇ ਪ੍ਰਤਿ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਅਧਿਕ ਹੋਤੀ ਹੈ।

(iii) ਜਨਸੰਖਿਆ ਮੇਂ ਸਾਮਾਜਿਕ ਆਰਥਿਕ ਸਤਰ :- ਉੱਚ ਸਾਮਾਜਿਕ ਆਰਥਿਕ ਸਤਰ ਵਾਲੇ ਲੋਗੋਂ ਮੇਂ ਬੱਚੇ ਕਮ ਉਤਪੰਨ ਹੋਤੇ ਹੈਂ। ਜਬਕਿ ਔਰ ਨਿਮਨ ਸਾਮਾਜਿਕ ਆਰਥਿਕ ਸਤਰ ਵਾਲੇ ਲੋਗੋਂ ਮੇਂ ਬੱਚੇ ਅਧਿਕ ਉਤਪੰਨ ਹੋਤੇ ਹੈਂ। ਇਸਕਾ ਮੁਖ੍ਯ ਕਾਰਣ ਯਹ ਮਾਨਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਕਿ ਉੱਚ ਸਾਮਾਜਿਕ ਆਰਥਿਕ ਸਤਰ ਵਾਲੇ ਵਿਅਕਤਿ ਅਧਿਕ ਬੱਚੇ ਪਾਲਨਾ ਪਸੰਦ ਨਹੀਂ ਕਰਤੇ ਹੈਂ। ਜਬਕਿ ਯਹ ਕਿ ਨਿਮਨ ਸਾਮਾਜਿਕ ਆਰਥਿਕ ਸਤਰ ਵਾਲੇ ਵਿਅਕਤਿ ਅਪਨੀ ਗਰੀਬੀ ਕੇ ਲਿਏ ਬੱਚੇ ਅਧਿਕ ਉਤਪੰਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ। ਜੋ ਅਧਿਕ ਬੱਚੋਂ ਕੋ ਪਰਿਵਾਰ ਕੀ ਸਮ੍ਰਿਧਿ ਸਮਝਤੇ ਹੈਂ। ਇਸਲਿਏ ਅਧਿਕ ਬੱਚੇ ਉਤਪੰਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ।

(iv) ਜਨਸੰਖਿਆ ਔਰ ਧਰਮ :- ਡਾਂਡੇਕਰ (1970) ਨੇ ਅਪਨੇ ਅਧਿਐਨ ਮੇਂ ਗਣਨਾ ਕਰਕੇ ਯਹ ਨਿਸ਼ਕਰਸ਼ ਨਿਕਾਲਾ ਕਿ ਹਿੰਦੂ ਮਹਿਲਾਓਂ ਮੇਂ ਫਰਟਿਲਿਟੀ 20 ਸੇ 25 ਪ੍ਰਤਿਸ਼ਤ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਜੋ ਕਿ ਮੁਸਲਿਮ ਮਹਿਲਾਓਂ ਕੀ ਅਪੇਕਸ਼ਾ ਅਧਿਕ ਹੈ। ਲੇਕਿਨ ਯਹ ਫਰਟਿਲਿਟੀ ਪ੍ਰਤਿਸ਼ਤ ਕੇ ਉੱਚ ਹੋਨੇ ਕੇ ਬਾਦ ਭੀ ਹਿੰਦੂ ਮਹਿਲਾਓਂ ਕੀ ਅਪੇਕਸ਼ਾ ਮੁਸਲਿਮ ਮਹਿਲਾਓਂ ਮੇਂ ਬੱਚੇ ਅਧਿਕ ਹੋਤੇ ਹੈਂ।

(v) ਜਨਸੰਖਿਆ ਔਰ ਮਨੋਵੈਗਿਆਨਿਕ ਕਾਰਕ :- ਜਨਸੰਖਿਆ ਕੀ ਦਰ ਕੋ ਕਮ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ

III

परिवार नियोजन कार्यक्रमों को प्रभावशाली नहीं बनाया जा सकता है। जब परिवार नियोजन के सम्बन्धित सम्पूर्ण निर्णय अधिक होगा उतना ही अधिक सम्भावना होगी कि परिवार नियोजित होगा और खुशहाल होगा।

(VI) जनसंख्या और स्त्रियों का निम्न सामाजिक स्थिति - भारतवर्ष में स्त्रियों का परिवार में सामाजिक स्थिति निम्न और पुरुषों का सामाजिक स्थिति उच्च समझी जाती है। यह भी माना जाता है कि स्त्रियाँ तो केवल संतान पैदा करने का साधन मात्र है। और बच्चों के पालन-पोषण का दायित्व उन्हीं का है। यह धारणा के कारण भी बच्चे अधिक उत्पन्न होते हैं।

(VII) जनसंख्या और अन्धविश्वास :- भारतवर्ष का जनसंख्या बढ़ने का कारण अन्धविश्वास भी है। अन्धविश्वास में यह मानना कि बच्चे ईश्वर का देन है। यह अन्धविश्वास के चलते बच्चे अधिक उत्पन्न होते हैं। फलस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि स्वाभाविक है।

(VIII) जनसंख्या और रोजगार योग्य :- भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है। यहाँ के लोग यह मानते हैं कि परिवार में जितने अधिक बच्चे, विशेषकर लड़के होंगे तो अधिक पुरुषों का कृषि कार्य में हाथ बटायेंगे और लड़कियाँ घरेलू काम-काज में हाथ बटायेंगी, इसके अलावा रोजगार योग्य व्यक्ति लोगों में बच्चे अधिक उत्पन्न होते हैं। वह अधिक बच्चे उत्पन्न करने को अच्छा मानते हैं। जब परिवारों का परिस्थिति की जाँच बदली जाए तो अब कुछ योग्य परिस्थितियों के विपरीत से अयोग्य नहीं होता है। वास्तव में अब कम योग्य व्यक्ति जन्म लेते नाकाबिल होते हैं। यह ज्ञान के साथ

(11)

करने के प्रयास में जनसंख्या शिक्षा शामिल हो गई है।

(ख) जनसंख्या और परिवार नियोजन में सम्बन्ध :- परिवार को नियोजित करके अथवा परिवार नियोजन के तरीकों का उपयोग करके बच्चों की जन्म दर को घटाया जा सकता है। जिससे जनसंख्या वृद्धि अपेक्षाकृत कम दर से हो सकती है। अधिकतर भारतवर्ष के दम्पत्तियों में परिवार नियोजन की विधियों की जानकारी होते हुए भी दम्पत्ति इन विधियों का उपयोग नहीं करते हैं। क्योंकि परिवार को नियोजित रखने में अथवा छोटा रखने में उनकी कोई रुचि नहीं होती है।

(ग) जनसंख्या और सामाजिक कारक :- भारतवर्ष की जनसंख्या वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारक सामाजिक कारक भी है। यह देखा जाता है कि अधिकतर दम्पत्तियों में बच्चों की संख्या देखकर अपने परिवार में बच्चों की संख्या निश्चित करते हैं। उदाहरण के लिए जब यह देखते हैं कि उनके पास-पड़ोस और रिश्तेदारों में बच्चों की संख्या 3 या 4 है, तो वह भी अपने परिवार में बच्चों की संख्या 3 या 4 रखना चाहते हैं। यही कारण है बच्चे अधिक उत्पन्न होते हैं। फलस्वरूप जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

(घ) जनसंख्या और पुत्र प्राप्ति की इच्छा :- भारतीय लोगों में यह माना जाता है कि पुत्र ही वंश को चलाता है। और यह भी माना जाता है कि वह वास्तव में पिता की मृत्यु के बाद अधिकारी होता है। अधिकतर लोग मानते हैं और कहते हैं।

By- Pramod Kumar Singh

Date- 26/05/2020

Scanned with CamScanner